Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-3* *Issue-5* *May 2026***

www.researchvidyapith.com **ISSN (Online): 3048-7331**

हिंदी उपन्यासों में किन्नर–विमर्श–विशेष संदर्भः 'यमदीप'

सिद्धार्थ शंकर

शोधार्थी, हिंदी भवन, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

Article Info: *(Recieved- 18/03/2026, Accept- 12/04/2026, Published- 10/05/2026)*
DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i50014

सार–

हिंदी साहित्य में किन्नर–विमर्श ने पिछले दो दशकों में एक महत्त्वपूर्ण विमर्शात्मक धारा के रूप में अपनी पहचान स्थापित की है। नीरजा माधव का उपन्यास 'यमदीप' किन्नर समुदाय के सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक जीवन को केंद्र में रखकर रचित एक उल्लेखनीय कृति है। वर्ष 2002 में प्रकाशित इस उपन्यास को हिंदी का प्रथम किन्नर–केंद्रित उपन्यास माना जाता है। उपन्यास की कथा एक मेजर के घर जन्मी तीसरी संतान 'नंदरानी' के जीवन–संघर्ष पर आधारित है, जिसे परिवार द्वारा त्याग दिए जाने के बाद किन्नर समुदाय में 'नाजबीबी' के रूप में नया जीवन प्राप्त होता है। उपन्यास में नाजबीबी के माध्यम से किन्नरों की सामाजिक उपेक्षा, पारिवारिक बहिष्कार, आर्थिक विवशता, मानसिक पीड़ा, सांस्कृतिक परंपराओं तथा आत्मसम्मान की आकांक्षा का अत्यंत संवेदनशील चित्रण किया गया है। 'नाजबीबी' और 'सोना' के संबंधों में किन्नर समुदाय की ममता, प्रेम और मानवीय संवेदनाएँ अभिव्यक्त होती हैं, जबकि 'मानवी' के चरित्र के माध्यम से स्त्री–संघर्ष और पितृसत्तात्मक व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर किया गया है। उपन्यास समाज, धर्म, राजनीति, पुलिस–प्रशासन, मीडिया और स्वयंसेवी संस्थाओं के दोहरे चरित्र पर भी प्रश्न उठाता है।

उपन्यास के अंत में नाजबीबी का राजनीति में प्रवेश करने का संकल्प किन्नर समुदाय के आत्मसम्मान, अधिकार–बोध और सामाजिक स्वीकृति की आकांक्षा का प्रतीक है। इस प्रकार 'यमदीप' किन्नर जीवन की त्रासदी, संघर्ष और संभावनाओं को प्रस्तुत करते हुए समाज को संवेदनशील, समावेशी और मानवीय दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

कुंजी शब्द– किन्नर–विमर्श, यमदीप, नीरजा माधव, नाजबीबी, तृतीय लिंग, सामाजिक बहिष्कार, लैंगिक असमानता, मानवीय संवेदना, आत्मसम्मान, हिंदी उपन्यास।

भारतीय संस्कृति सदैव से उदार, समावेशी एवं बहुलतावादी रही है। मानव ने अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति हेतु प्रारंभ में सांकेतिक माध्यमों का प्रयोग किया तथा कालांतर में बोली, भाषा और लिपि के विकास के साथ साहित्यिक परंपरा का विस्तार हुआ। चित्रलिपि से लेकर देवनागरी लिपि तक की यह यात्रा मानव सभ्यता के विकास का परिचायक है। साहित्य की गद्य एवं पद्य विधाओं में कविता, कहानी, निबंध, आत्मकथा, जीवनी, डायरी, पत्र तथा उपन्यास आदि प्रमुख हैं। इनमें से उपन्यास को सर्वाधिक व्यापक एवं जीवन–सापेक्ष विधा माना गया है, क्योंकि इसमें समाज, संस्कृति, भाषा, आंचलिकता, जीवन–शैली और मानवीय संबंधों का विस्तृत आख्यान प्रस्तुत होता है। आधुनिक हिंदी साहित्य में सामाजिक सरोकारों को केंद्र में रखकर अनेक विमर्शात्मक धाराएँ विकसित हुई हैं। दलित–विमर्श, स्त्री–विमर्श, आदिवासी–विमर्श और किन्नर–विमर्श जैसे विषयों ने साहित्य को नई दृष्टि प्रदान की है। विशेषतः पिछले दो दशकों में किन्नर–विमर्श हिंदी साहित्य में एक

महत्वपूर्ण विमर्श के रूप में उभरा है। किन्नर समुदाय की पीड़ा, सामाजिक बहिष्कार, आर्थिक शोषण तथा मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति देने का कार्य हिंदी उपन्यासों ने प्रभावशाली ढंग से किया है। भारतीय समाज में स्त्री और पुरुष को सामाजिक संरचना की मूल धुरी माना गया है, क्योंकि सृष्टि का प्रवाह इन्हीं दो लिंगों से संचालित होता है। किंतु तृतीय लिंगी अथवा किन्नर समुदाय को केवल जैविक भिन्नता के कारण समाज द्वारा उपेक्षित और तिरस्कृत किया जाना अत्यंत अमानवीय है। समाज का यह दोहरा दृष्टिकोण किन्नरों को मुख्यधारा से अलग कर देता है।

इसी संदर्भ में हिंदी साहित्य की सुप्रसिद्ध लेखिका नीरजा माधव द्वारा रचित उपन्यास श्यमदीपश विशेष महत्व रखता है। वर्ष 2002 में प्रकाशित, यह हिंदी का प्रथम किन्नर–केंद्रित उपन्यास माना जाता है। लेखिका ने 'नाजबीबी' को केंद्र में रखकर किन्नर समुदाय के सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक पक्षों का अत्यंत मार्मिक एवं शोधपरक चित्रण किया है।

उपन्यास के शीर्षक 'यमदीप' की व्याख्या करते हुए लेखिका अपनी भूमिका में लिखती हैं कि–

"घर के एक दीये को केवल यम से संवाद करने के लिए उठाकर घूर (कूड़ा–करकट) पर रख देना और फिर उधर मुड़कर भी न देखना कि वह कब जलते–जलते बुझ गया, सत्य से विमुख होना है।"

यह कथन किन्नरों की सामाजिक स्थिति का सशक्त प्रतीक बनकर सामने आता है। समाज जिस प्रकार किन्नरों को अपने जीवन से अलग कर देता है, उसी स्थिति को 'यमदीप' के प्रतीक के माध्यम से व्यक्त किया गया है। उपन्यास की कथा एक मेजर के घर जन्मी तीसरी संतान 'नंदरानी' के जीवन–संघर्ष पर आधारित है। माँ की लाड़ली नंदरानी का 'नाजबीबी' नामक हिजड़े के रूप में रूपांतरण अत्यंत हृदयविदारक है। परिवार द्वारा उसे त्यागकर महताब गुरु के पास हिजड़ों की बस्ती में सौंप दिया जाता है। यह घटना केवल एक व्यक्ति की त्रासदी नहीं, बल्कि पूरे किन्नर समुदाय की सामाजिक नियति को उद्घाटित करती है।

लेखिका ने उपन्यास में किन्नरों की आर्थिक विवशता, सामाजिक बहिष्कार, सांस्कृतिक परंपराओं और मानसिक पीड़ा का अत्यंत संवेदनशील चित्रण किया है। नाजबीबी और सोना के संबंधों के माध्यम से किन्नरों के भीतर विद्यमान ममता, स्नेह और मानवीय संवेदनाओं को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त 'मानवी' के चरित्र के माध्यम से स्त्री–संघर्ष और पितृसत्तात्मक समाज की विसंगतियों को भी रेखांकित किया गया है। यमदीप केवल किन्नरों की कथा नहीं है, बल्कि यह समाज की रूढ़िवादी मानसिकता, धार्मिक मतभेदों, स्त्री–शोषण, पुलिस–प्रशासन, राजनीति, मीडिया तथा स्वयंसेवी संगठनों की वास्तविकता को भी उजागर करता है। उपन्यास यह दिखाता है कि समाज के तथाकथित 'रक्षक' ही अनेक बार 'भक्षक' बन जाते हैं। उपन्यास का अंत आशावादी है, जहाँ नाजबीबी राजनीति में आने का संकल्प लेती है। यह संकल्प केवल व्यक्तिगत संघर्ष का प्रतीक नहीं, बल्कि किन्नर समुदाय के आत्मसम्मान और सामाजिक स्वीकृति की आकांक्षा का भी प्रतीक है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यमदीप हिंदी साहित्य में किन्नर–विमर्श का एक महत्वपूर्ण और मील का पत्थर सिद्ध होने वाला उपन्यास है। यह उपन्यास किन्नर समुदाय की यथार्थ स्थिति का साक्षात्कार कराता है तथा समाज को अपने पूर्वाग्रहों से बाहर निकलकर संवेदनशील दृष्टि अपनाने के लिए प्रेरित करता है। लेखिका ने किन्नरों के राग–विराग, प्रेम, ममता और मानवीय संवेदनाओं को अत्यंत सूक्ष्मता और प्रभावशीलता के साथ चित्रित किया है। यह उपन्यास केवल तृतीय लिंगी समुदाय की समस्याओं तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय समाज की अनेक विसंगतियों, सामाजिक असमानताओं और मानवीय विडंबनाओं को भी उजागर करता है। इस प्रकार 'यमदीप' हिंदी उपन्यास, साहित्य में एक विशिष्ट और उत्कृष्ट कृति के रूप में स्थापित होता है, जिसने किन्नरों के प्रति समाज में संवेदनात्मक चेतना जगाने का सफल प्रयास किया है।

वर्तमान समय में किन्नर समुदाय की सामाजिक स्थिति में कुछ सकारात्मक परिवर्तन अवश्य दिखाई देते हैं। शिक्षा, राजनीति, प्रशासन, कला, साहित्य और सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में किन्नर समुदाय के अनेक व्यक्तियों ने अपनी प्रतिभा और क्षमता का परिचय दिया है। इसके बावजूद समाज के एक बड़े वर्ग में उनके प्रति उपेक्षा, भेदभाव और संकीर्ण मानसिकता अभी भी विद्यमान है। किन्नरों को शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवाओं, आवास तथा सम्मानजनक जीवन के अवसर समान रूप से प्राप्त नहीं हो पाते। ऐसी स्थिति में 'यमदीप' जैसे उपन्यास समाज को आत्मचिंतन करने और अपनी रूढ़िवादी धारणाओं में परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करते हैं।

नीरजा माधव ने किन्नर समुदाय को केवल दया अथवा करुणा के पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है, बल्कि उन्हें अपनी इच्छाओं, सपनों, संघर्षों और आत्मसम्मान से युक्त मनुष्य के रूप में चित्रित किया है। नाजबीबी का चरित्र यह सिद्ध करता है कि प्रतिकूल परिस्थितियों और सामाजिक तिरस्कार के बावजूद व्यक्ति अपने अस्तित्व और अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकता है। उसका राजनीति में प्रवेश करने का निर्णय सामाजिक व्यवस्था में सक्रिय भागीदारी तथा परिवर्तन की इच्छा को व्यक्त करता है। उपन्यास यह प्रश्न भी उठाता है कि किसी मनुष्य की पहचान केवल उसके लिंग के आधार पर क्यों निर्धारित की जाए। प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता, संवेदना, विचार और मानवीय गुणों के आधार पर सम्मान प्राप्त होना चाहिए। परिवार और समाज द्वारा किसी किन्नर बच्चे को स्वीकार न किया जाना उसकी मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक समस्याओं का प्रमुख कारण बनता है। यदि परिवार प्रारंभ से ही ऐसे बच्चों को प्रेम, शिक्षा और सुरक्षा प्रदान करे, तो वे भी समाज के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। 'यमदीप' की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि यह पाठकों को किन्नर समुदाय की बाहरी जीवन–शैली से आगे बढ़कर उनके आंतरिक संसार को समझने का अवसर प्रदान करता है। उपन्यास में वर्णित पीड़ा, ममता, प्रेम, अकेलापन और संघर्ष जैसी भावनाएँ केवल किन्नर समुदाय की नहीं, बल्कि सार्वभौमिक मानवीय भावनाएँ हैं। इस दृष्टि से यह उपन्यास समानता, सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा का संदेश देने वाली एक सशक्त साहित्यिक रचना है।

अतः आवश्यकता है कि साहित्य के साथ–साथ शैक्षणिक संस्थानों, सामाजिक संगठनों, प्रशासन और परिवारों के स्तर पर भी किन्नर समुदाय के प्रति संवेदनशीलता विकसित की जाए। उन्हें समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित करने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सम्मानजनक रोजगार, स्वास्थ्य सुविधाएँ और कानूनी संरक्षण उपलब्ध कराया जाना चाहिए। 'यमदीप' हमें यह संदेश देता है कि समावेशी समाज का निर्माण केवल कानूनों से नहीं, बल्कि मनुष्य की सोच, व्यवहार और संवेदना में परिवर्तन से संभव है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. भीष्म, महेंद्र। (2011)। किन्नर कथा। सामयिक प्रकाशन।
2. भीष्म, महेंद्र। (2016)। मैं पायल...रू किन्नर गुरु पायल सिंह के जीवन–संघर्ष पर आधारित उपन्यास। अमन प्रकाशन।
3. भुराड़िया, निर्मला। (2014)। गुलाम मंडी। सामयिक प्रकाशन।
4. खान, एम. फिरोज (संपा.)। (2017)। थर्ड जेंडररू कथा आलोचना। अनुसंधान पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
5. माधव, नीरजा। (2002)। यमदीप। सामयिक प्रकाशन।
6. मुद्गल, चित्रा। (2016)। पोस्ट बॉक्स नं. 203, नाला सोपारा। सामयिक प्रकाशन।
7. सौरभ, प्रदीप। (2011)। तीसरी ताली। वाणी प्रकाशन।
8. सिंह, विजेंद्र प्रताप। (2017)। हिंदी उपन्यासों के आईने में थर्ड जेंडर। अमन प्रकाशन।
9. सिंह, विजेंद्र प्रताप, एवं गोंड, रवि कुमार (संपा.)। (2016)। भारतीय साहित्य और समाज में तृतीय लिंगी विमर्श। अमन प्रकाशन।
10. त्रिपाठी, लक्ष्मीनारायण। (2015)। मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी (शशिकला राय एवं सुरेखा बंसकर, अनु.)।

Cite this Article

"सिद्धार्थ शंकर", "हिंदी उपन्यासों में किन्नर–विमर्श–विशेष संदर्भः 'यमदीप'", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:5, May 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."